गुरु अर्जुनदेव जी : अरदास से बलिदान तक

– स. चिरंजीव सिंह

पंचम् गुरु अर्जुनदेव जी श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का सम्पादन करने वाले हैं। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की श्री हरिमन्दिर साहिब-अमृतसर में स्थापना आपके द्वारा की गई। तब जहां बाबा बुड्ढा जी पहले ग्रंथी साहिबान के रूप में थापे गए, वहीं गुरुदेव पहले चौउर-बरदार की भूमिका में थे। पंचम् गुरु अर्जुनदेव जी सिख इतिहास के पहले शहीद हैं। उनके प्रकाश और शहादत के मध्य अरदास ही जीवन-दर्शन है। वे अपने शबद् के माध्यम से कहते हैं-

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि॥
तुम मात-पिता हम बारिक तेरे॥
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे॥
कोइ न जानै तुमरा अंतु॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी॥
नानक दास सदा कुरबानी॥८॥४॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 268)

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि हे प्रभु ! हे स्वामी ! तुम अकेले ही मेरी शक्ति हो केवल अकेले आपके समक्ष अरदास या प्रार्थना करता हूं। मेरे पास स्थान नहीं, जहां जाकर मैं अपनी विनती करूं। मेरा सुख और दुख आपके द्वारा दिया है।

मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि॥
मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि॥ (श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 735)

हे मेरे प्रभु और स्वामी, जिनके पास सम्मान नहीं, उन्हें आप सम्मान देने वाले हैं। हे अकालपुरख ! मैं आपके समक्ष अरदास करता हूं। श्रवण करता हूं, वाणी में तेरे नाम को।

मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी॥
अरदासि करी प्रभ अपने आगे सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी॥१॥रहाउ॥ (श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 749)

गुरु अर्जुनदेव जी प्रभु रंग में रंगे भक्त की स्थिति और उसकी अरदास के विषय में कहते हैं-

जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि॥
धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि॥३॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 722)

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि प्रभु तीनों प्रकार के तापों से हरने वाला है। वह दुख को हरता है और सुख सम्पदा प्रदान करता है। प्रभु के आगे अरदास से सभी विघ्न दूर हो जाते हैं।

तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि॥
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ अरदासि॥१॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 714)

अरदास के फलसफे और गुरुनानक देव जी के मार्ग के संदर्भ में पंचम् गुरुदेव कहते हैं-

सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई॥
प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडि आई॥४॥१॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 611)

प्रभु सदैव दयालु है और भक्त की अरदास सुनकर कृपा करने वाला है।

मेरा प्रभु होआ सदा दइआला॥
अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 627)

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि प्रभु शक्ति, बौद्धिक ऊर्जा, चेतना, प्राण सहित सन्तजनों के लिए सब कुछ है। प्रभु ! एक क्षण भी विस्मृत न करना, ऐसी गुरुनानक की अरदास है।

बल बुधि सुधि पराण सरबसु संतना की रासि॥
बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि॥८॥२॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 1017)

प्रभु, आपके अतिरिक्त कोई नहीं, ऐसी नानक की विनम्र अरदास है। वह आषाढ़ का महीना सुखद है, जिसमें मन प्रभु चरणों में निवास करता है।

प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि॥
आसाढ़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास॥५॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 134)

सम्पूर्ण सृष्टि प्रभु का साम्राज्य है। स्वप्न में भी ऐसे साम्राज्य स्वामी का ही चिन्तन करना है। जिसने संसार को माया का खजाना दिया है, उसी ने तृष्णा भी प्रदान की है। वह सबकुछ समाप्त करता है, पुनर्जीवित भी करता है। गुरदेव ऐसे प्रभु के आगे अरदास करते हैं-

जिस का राजु तिसै का सुपना॥
जिनि माइआ दीनी तिनि लाई त्रिसना॥
आपि बिनाहे आपि करे रासि॥
नानक प्रभ आगै अरदासि॥४॥११॥८०॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 179)

गुरु अर्जुनदेव जी का कथन है कि साध संगत की प्राप्ति के बाद निर्मल होकर मृत्यु के फंदे से मानव मुक्त हो जाता है। प्रभु सुख को देने वाला है, भय का अंत करने वाला है, उस प्रभु के आगे तुम अरदास करो। वह दयावान दया करेगा और कार्य सफल होगा।

साध संगति होइ निरमला कटीए जम की फास॥
सुखदाता मै भंजनों तिसु आगै करि अरदासि॥
मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 44)

दिन-रात सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु की सेवा करता है। हे प्रभु ! अपने कर्णों से मेरी अरदास सुनो। मैने तुम्हारा चिन्तन कर पाया है कि तुम अकेले, अपने आनन्द में, हमें हर प्रकार से बचा सकते हैं।

सभ स्रिसटि सेवे दिनु राति जीउ॥ दे कंनु सुणहु अरदासि जीउ॥
ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ॥२॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 74)

बिना आध्यात्मिक साधना के बलिदान संभव नहीं है। इसका सही प्रमाण पंचम् नानक श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की बाणी में मिलता है।

तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा॥
कहु नानक सभ तेरी वडीआई कोई नाउ न जाणै मेरा॥४॥१०॥४९॥

(श्री गुरुग्रंथ साहिब जी, अंग 383)